

गड़ौली धाम,
काशी क्षेत्र



“

सम्मानित आत्मीय जनों,

सेना के एक टेंट से, प्रथम नवरात्रि को प्रारंभ परिकल्पना को मूर्त रूप लेते हुए देख रहा हूँ, तो यह मुझे किसी दिव्य दैवीय योजना की परिणीति का आभास कराती है। गौ, गंगा, गौरीशंकर का पावन आह्वान, माँ विंध्यवासिनी व माँ गंगा का सानिध्य गड़ौली धाम को एक अलौकिक आभा प्रदान करता है जहाँ - आध्यात्म, विज्ञान, मौलिक चिंतन, परम्पराओं व पद्धतियों का अन्द्रुत क्रियान्वयन हम देख व आत्मसात कर पाते हैं। इस दिव्यता में तथा इस विस्तृत परिवार में मैं आपका हृदय से स्वागत करता हूँ।

कृष्णल
गंगा

”



ब्रह्माण्ड के सभी ग्रह, नक्षत्र और
तारे शिव में ही समाहित हैं।

सृष्टि के सृजन, संचालन और संहार के मूल में

शिव ही हैं। हमारी कामना है कि भगवान भोलेनाथ
के आशीर्वाद से सभी उन्नति एवं
खुशहाली के पथ पर बढ़ते रहें।



महादेव की प्यारी, दिव्य नगरी काशी!!

काशी को शब्दों, वाक्यों, परिभाषाओं में बाँधने के सभी प्रयास असफल रहे हैं अतः ऐसा प्रयास हम भी नहीं करेंगे पर काशी क्षेत्र में स्थित दिव्य “गड़ौली धाम” में आकर यहाँ के होकर रह जाने का एक स्नेहिल निमंत्रण आपको अवश्य देना चाहेंगे।

12 काल, नौ दिशा, तीन लोक यहाँ पर हैं। काशी को ऐसे ही धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक राजधानी नहीं कहा जाता। तीन लोक का भू-विन्यास यानी वैज्ञानिक भाषा में कहा जाए तो स्पेस भी यहीं पर है। कालांतर में काशी ही एकमात्र ऐसा नगर है जो ज्यों का त्यों स्थापित है। मान्यता है कि काशी के कण-कण में शिव का वास है। प्राचीन पुराणों के अध्ययन से पता चलता है कि यहाँ प्रमुख रूप से 324 मुख्य शिवलिंग हैं।

यही नहीं भारतीय प्राचीन वांगम्य, नीति, वैज्ञानिक पत्र, प्राचीन ऋषियों के सूर्य के प्रतिमान काशी में एक विशिष्ट वैज्ञानिक आधार स्थापित करते हैं। हर युग में काशी आध्यात्म, संस्कृति और शिक्षा का केंद्र रही। किसी मत का प्रवर्तन करना हो या उसका खंडन सब काशी आकर ही होता था। इसे प्रयोग भूमि के रूप में जाना गया। बुद्ध ने ज्ञान बोध गया में प्राप्त किया, पर धर्म चक्र प्रवर्तन के लिए ऋषि पत्तन यानी सारनाथ, वाराणसी आए। तुलसी यहीं पर राम के गीत गाते हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के लिए गागा भट्ट काशी से जाते हैं। महान विचारक, स्वतंत्रता सेनानी, कर्मयोगी भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय ने भी यहीं काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। कह सकते हैं जिसे काशी ने स्वीकार किया, वह जग का हो गया। दरअसल, काशी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संवाद की प्रयोगशाला रही है।

उत्तरमुखी गंगा जी का तीर्थ जिसे अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की ललक वाले, काशी कहते हैं। वरुणा की लोललहर और अस्सी नदी की स्फीत भरी जलराशियों में आबद्ध होने के कारण वाराणसी (वरुण+अस्सी) नाम से भी पुकारते हैं। काशी में हर आँख पढ़ने के लिए खुलती है, होठ और जिह्वा मंत्रोच्चार के लिए आतुर रहते हैं।

काशी के संस्पर्श से हर व्यक्ति ऋषि सा हो जाता है। यहाँ जो भी आया यहीं का होकर रह गया। आने वाला आते ही आसमान में चलने लगता है, ऋतुओं की हवाओं में नहाने लगता है। मंदिरों के शिखरों पर पग प्रणाम करने लगता है। यहाँ कोई आना चाहे, चाहे न चाहे, आने पर जाना नहीं चाहता।



गड़ौली धाम, काशी क्षेत्र की महत्ता

गंगा जी के बाएँ तट पर वाराणसी से 38 किलोमीटर पश्चिम में स्थित, जिसके कण-कण में गौ, गंगा, गौरीशंकर की अलौकिक अनुभूति है, ऐसा गड़ौली धाम, पुरातात्त्विक महत्व वाले अगियाबीर क्षेत्र में स्थित है। अगियाबीर क्षेत्र के उत्खनन से पाँच सांस्कृतिक कालों की पुरा सामग्री प्रकाश में आई थी, ये थे -

- नरहन संस्कृति (1300 ई.पू. से 900 ई.पू.)
- लौहयुगीन, उत्तरी पूर्व से कृष्ण परिमार्जित संस्कृति (900 ई.पू. से 600 ई.पू.)
- उत्तरी कृष्ण परिमार्जित संस्कृति (600 ई.पू. से 200 ई.पू.)
- शुंग कुषाण काल (200 ई.पू. से 300 ईसवीं तक)
- गुप्त एवं परवर्ती गुप्त जमाव (300 ईसवीं से 700 ईसवीं तक)

स्वाभाविक है की पौराणिक, पुरातात्त्विक, आध्यात्मिक सभ्यता से सिंचित यह दिव्य भूमि सहज ही युग प्रवर्तक कर्मों, प्रयासों का उद्गम बने और इसी का मूर्त रूप है “गड़ौली धाम”。 सदानीरा माँ गंगा का स्निग्ध आँचल, माँ विंध्यवासिनी का आशीष, गौरीशंकर की 108 फीट ऊँची प्रतिमा (निर्माणाधीन) तथा ग्रामीण परिवेश का सौन्दर्य, शुद्धता व पवित्रता लिए यह धाम आने वाले श्रद्धालुओं को बरबस ही बाँध लेता है।

धाम में गतिविधियों के प्रत्येक आयाम में जहाँ संस्कारों, परम्पराओं और आस्था का समावेश आप सहज देख पायेंगे, वहीं सभी प्रकल्पों के मूल में वैज्ञानिक चिंतन और शोध आपके अनुभव को समृद्ध व दिव्य बनाएगा।





गडौली, कमहरिया, कच्छ

(कटका नार्ग से गडौली प्राइमरी स्कूल होते हुए)

मानचित्र



विशेष- प्रवेश केवल कटका पदाव से एवं निकास कच्छा से है।

(अमृतसर राम)
ओ.एस. बालकुन्डन
फाउण्डेशन - काशी



गौ, गंगा, गौरीशंकर

गड्डौली धाम के कण कण में गौ, गंगा, गौरीशंकर का अलौकिक आभास जहाँ आपमें अपूर्व आधात्मिक संवेदना व चेतना जागृत करता है, वहीं यहाँ हो रहे ग्राम सशक्तिकरण के प्रयासों से आपको एक बहुपयोगी अनुभव के साथ साथ कुछ सार्थक कर पाने का संतोष भी प्राप्त होता है।





गौ माता

गड़ौली धाम में आकर आपका विश्वास प्रबल होता है कि गौ माता की जीवन में अभिन्न उपस्थिति मानसिक, भौतिक, लौकिक, अलौकिक, आध्यात्मिक व आर्थिक समृद्धि का कारक है।

भारतीय जीवन पद्धति एवं सांस्कृतिक परम्परा में गौ माता का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक काल से ही गौमाता हमारी जीवन शैली के केंद्र में रहीं हैं। कभी उनकी संख्या के आधार पर राजाओं तक की प्रतिष्ठा आंकी जाती थी। दान में गौ दान का महत्व था। सेवा में गुरु सेवा के बाद गौ सेवा को ही अपनाकर व्यक्ति पुण्य-परिष्कार का मार्ग प्रशस्त करता था। गौ माता भारतीय चेतना के प्राणों में सदियों से रची-बसी हैं। हो भी क्यों न, क्योंकि गौ माता में सम्पूर्ण आध्यात्मिक शक्तियों व देवी-देवताओं का निवास जो माना जाता है।

चारों वेदों में गौ माता का सन्दर्भ 1311 बार आया है। ऋग्वेद में 723 बार, यजुर्वेद में 87 बार, सामवेद में 170 बार और अथर्ववेद में 331 बार, गौ माता का विषय आया है। इन वेद मंत्रों में गौ माता की महत्ता, उपयोगिता, वात्सल्य, करुणा और गोरक्षा के उपाय तथा उनसे प्राप्त पंचगव्य पदार्थों के उपयोग और लाभ का वर्णन है। वेदों में गौ माता के लिए गो, धेनु और अच्या ये तीन शब्द आये हैं। वेदों को समझने के लिये छः वेदांग शास्त्रों में से एक निरुक्त शास्त्र है। इसमें वैदिक शब्दों के अर्थों को खोलकर बताया गया है।

जिसे निर्वचन कहते हैं। गौ माता को अच्या कहा है अर्थात् जिसकी कभी भी हिंसा न की जाये। शतपथ ब्राह्मण में (7/5/2/34) में कहा गया है - “सहस्रो वा एष शतधार उत्स यदगौः” अर्थात् भूमि पर टिकी हुई जितनी जीवन संबंधी कल्पनाएँ हैं उनमें सबसे अधिक सुंदर, सत्य, सरस और उपयोगी यह गौ है।

जिनके सींगों के अग्रभाग में साक्षात् जनर्दन विष्णु स्वरूप भगवान वेदव्यास रमण करते हैं। जिनके सींगों की जड़ में देवी पार्वती और सींगों के मध्य भागों में भगवान सदाशिव विराजमान रहते हैं। जिनके मस्तक में ब्रह्मा, कंधे में बृहस्पति, ललाट में वृषभारूढ़ भगवान शंकर, कानों में अश्विनी कुमार तथा नेत्रों में सूर्य और चंद्रमा रहते हैं।

जिनके दाँतों में समस्त ऋषिगण, जीभ में देवी सरस्वती तथा वक्षःस्थल में एवं पिंडलियों में सारे देवता निवास करते हैं। जिनके खुरों के मध्य भाग में गंधर्व, अग्रभाग में चंद्रमा एवं भगवान अनंत व पिछले भाग में अप्सराओं का स्थान है। जिनके पृष्ठ (नितंब) में पितृ गणों का तथा भृकुटिमूल में तीनों गुणों का निवास बताया गया है। जिनके रोमकूपों में ऋषि गण तथा चमड़ी में प्रजापति निवास करते हैं।

जिनके थूहे में नक्षत्रों सहित श्रुतिलोक, पीठ में सूर्यतनय यमराज, अपान देश में संपूर्ण तीर्थ एवं गोमूत्र में साक्षात् गंगा विराजती हैं। जिनकी दृष्टि, पीठ व गौ-बर में स्वयं लक्ष्मीजी निवास करती हैं। जिनके नथुनों में अश्विनीकुमारों का एवं होठों में चंडिका का वास है। जिनके स्तन जल से पूर्ण चारों समुद्र हैं। जिनके रंभाने में देवी सावित्री व हुंकार में प्रजापति का वास है। ऐसी गौ माता की महत्ता का वंदन हमारी सभी परम्पराओं, संस्कारों, शास्त्रों इत्यादि में है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से पता चलता है कि उस समय गायों की समृद्धि और स्वास्थ्य की देखरेख के लिए विशेष विभाग के अंतर्गत “गोअध्यक्ष” था। भगवान श्रीकृष्ण के समय भी गायों की अधिक संख्या सामाजिक प्रतिष्ठा एवं ऐश्वर्य का प्रतीक मानी जाती थी। नंद, उपनंद, नंदराज, वृषभानु, वृषभानुवर आदि उपाधियाँ गोसंपत्ति के आधार पर ही दी जाती थीं। श्रीकृष्ण गौ माता के असंख्य गुणों को जानते थे और इसी कारण गौ माता उन्हें अत्यंत प्रिय थी, वे उनका पालन करते थे और इसी कारण उनका प्रिय और पवित्र नाम गोपाल भी है। गोधन को सर्वोत्तम धन मानने के कारण ही ब्राह्मण की सबसे बड़ी दक्षिणा “गाय” मानी जाती रही है।

गर्ग संहिता गोलोक-खण्ड अध्याय-4 में लिखा है - जिस गोपाल के पास पाँच लाख गौ माता हों उसे उपनंद और जिसके पास नौ लाख गौ माता हो उसे नंद कहते हैं। दस हजार गौ माता के समूह को व्रज अथवा गोकुल कहा जाता था। इससे ये बात तो स्पष्ट हो जाती है कि ‘गौ माता’ द्वापर युग से ही हमारे अर्थतंत्र का मुख्य आधार रही है। महाभारत काल में युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्न “अमृत किम्?” यानि अमृत क्या है? के उत्तर में “गवाऽमृतम्” यानि गौ माता का दूध कहा था।

गाँधीजी ने भी लिखा है कि “देश की सुख-समृद्धि गौ माता के साथ ही जुड़ी हुई है।” ये बात अनेक प्रकार से सार्थक है और इसी कारण ही संसार से विरक्त हुए सोने चांदी के भण्डार को ठुकरा कर जंगल की शरण लेने वाले ऋषियों और महाराजाओं ने सर्वस्व के त्याग में भी “गाय” का त्याग नहीं किया था।





हमारी कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का भविष्य ‘गौ माता’ और ‘बैल’ पर जितना निर्भर है, उतना सिंचाई को छोड़कर किसी और साधन पर निर्भर नहीं है। हमें दूध देने वाली एवं बैल उत्पन्न करने वाली गौ माता स्वयं मनुष्य का खाद्य नहीं खाती, वह हमारे भोजन का या खेती का शेष भाग ही ग्रहण करती है अर्थात् गाय घास, भूसा, निंदाई से निकला खर पतवार आदि चारा खाती है। कृषि विशेषज्ञों का अध्ययन है कि “गौ माता जितनी भूमि में लगी घास खाती है, उसके मलमूत्र से उतनी भूमि पर आठ गुना उत्पादन बढ़ जाता है। गौ माता कभी किसान व कृषि के लिये बोझ नहीं होती, मरने के बाद भी नहीं।”

‘तत्र गव्यं तु जीवनीयं रसायनम्’ रूप से भारतीय आयुर्वेदशास्त्र ने भी गौ माता का महत्व स्वीकार किया गया है। विज्ञान ने भी अब शोध कार्यों के बाद गौ माता में वैचारिक, शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास के तत्व खोज निकाले हैं। संतगण तो बताते हैं कि गौ माता के सान्निध्य में रहने वाले के स्वभाव एवं चिंतन-चरित्र में सहज सात्त्विकता प्रवाहित होने लगती है। गौ माता की सेवा करने, उसको संरक्षित करने वाले व्यक्ति के जीवन का आत्म उत्थान होता ही है। ऐसे व्यक्तियों का घर-परिवार, धन-वैभव व प्रतिष्ठा से भी भरा पूरा रहता है, श्रीशक्ति उसका कभी साथ नहीं छोड़ती। गौ माता का दूध शारीरिक स्वास्थ्य संवर्धक व मन में स्थिरता, शांति तथा उत्कृष्टता उत्पन्न करता है। जैसे संत-तपस्वियों के सानिध्य में रहने से सात्त्विक विचारों का प्रादुर्भाव होता है, वैसे ही गौ माता की समीपता से व्यक्ति में शुभ और आध्यात्मिक विचार आते हैं। मन की दुर्भावनाएँ गौ माता के दूध के सेवन से दूर होती हैं, क्योंकि मनोविकारों को दूर करने की गोरस में अद्भुत क्षमता है, इसीलिए पंचगव्य के नियमित सेवन का विधान बताया गया है। उसमें गौ दूध से लेकर अनेक गौ उत्पाद सम्मिलित किये जाते हैं। मानवीय सात्त्विक बुद्धि अर्थात् प्रज्ञा और प्रतिभा को प्रखर बनाने में गौ रस का प्रभाव श्रेष्ठतम परिलक्षित होता है। विशेषज्ञ कहते हैं सतगुणी संतति प्राप्त करने में भी गौ दुग्ध का अप्रतिम योगदान है।

इसी प्रकार देशी गौ-बर की खाद से उत्पन्न अन्न में जो दिव्य प्रभाव रहता है, वह अन्य खादों में नहीं मिलता। क्योंकि जहां रासायनिक खादों के प्रयोग से खाद्यानों में कई रोगों की शुरुआत होती है, वहीं गौमाता की खाद से पृथक्की को सकारात्मक पोषण मिलता है। ‘गौ’ मूत्र तो अनेक रोगों की अचूक औषधि बताई ही गयी है।

आध्यात्मिक साधना में गौ माता की समीपता, गौ सेवा, एवं गौ दुग्ध का सेवन बड़े महत्व का है। इसलिए वैदिक काल से ही ऋषिगण गौ माता को महत्व देते आये हैं। राजा दिलीप, भगवान श्रीकृष्ण तथा अन्य कई महापुरुषों ने भी गौ सेवा को अत्यधिक महत्व दिया था। इसलिए गौ माता के सर्वविध लाभ को देखते हुए हमारे धार्मिक ग्रन्थों ने गौ को ‘माता’ कहा तथा इसकी सेवा का विधान प्रस्तुत किया।

गड़ौली धाम में आप उपरोक्त सभी विचारों का अक्षरशः अनुपालन तथा ऐसे आचरण के सकारात्मक प्रभावों जैसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सशक्तिकरण, आस्थाओं व मान्यताओं का सदृढ़ होना तथा इससे जनित सुविचारों व सद्द्वाव की अनुभूति अवश्य कर पाएंगे।

गंगा मैया

गड़ौली धाम में जहाँ गंगा मैया की शास्त्रोक्त महत्ता शिरोधार्य है, सर्वोपरि है, वहीं - गंगा मैया आस्था ही नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था की मेरुदंड हैं - इस विचार पर हो रहे ठोस कार्य के भी आप साक्षी बनेंगे। आप देखेंगे की गड़ौली धाम नवीन अपेक्षाओं को अवतरित करते हुए एक पावन संस्कृति को जीवंत करने का उपक्रम है।

‘गंगा’ शब्द हमारे लिए लिए प्रातःस्मरणीय मंत्र है। इसलिए ही तो हम भारत की सभी नदियों को गंगा ही मानते हैं। यदि किसी नदी को दिव्यता प्रदान करनी है तो उसे गंगा कह कर सम्बोधित करना हमारी भगवती गंगा मैया के प्रति अनादि काल से चली आने वाली भावना का ही प्रतिफल कहा जाएगा। गंगा मैया सब के लिए पुण्य प्रदायिनी आत्म-स्वरूपा है। जीवनदायिनी हैं।

गंगा मैया का माहात्म्य वर्णिणीतीत है। श्रीमद्भागवत गीता में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं - ‘स्रोतसामस्मि जाह्नवी’ अर्थात् नदियों में मैं जाह्नवी (गंगा) हूं। महाभारत में गंगा मैया के बारे में कहा गया है - ‘पुनाति कीर्तिता पापं द्रष्टा भद्र प्रयच्छतिअवगाढ़ा च पीता च पुनात्या सप्तम कुलम॥।’ अर्थात् गंगा मैया अपना नाम उच्चारण करने वाले के पापों का नाश करती है। दर्शन करने वाले का कल्याण करती है तथा स्नान-पान करने वाले की सात पीढ़ियों तक को पवित्र करती है।





इसी तरह वेदों एवं पुराणों में गंगा मैया को बारंबार तीर्थमयी कहा गया है। ‘सर्वतीर्थमयी गंगा सर्वदेवमया हरिः’। (नृसिंह पुराण) गंगा मैया का जल धार्मिक ग्रन्थों में श्रेष्ठतम कहा गया है। कहा गया है कि -‘गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः।’ पूरे विश्व में ऐसी कोई नदी नहीं जिसे इतना आदर मिला हो। इसे केवल जल का स्रोत नहीं वरन् देवी मानकर पूजा जाता है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान गंगा मैया के बिना पूरा नहीं होता। गंगा मैया संपूर्ण भारत के लोगों के लिए पूज्य व पवित्र है। दक्षिण भारत में दीपावली के दिन जब स्नानोपरान्त एक दूसरे से मिलते हैं तो एक दूसरे से पूछते हैं कि क्या आपका गंगा स्नान हो गया? समस्त विश्व में हर सनातनी प्रयागराज, काशी, हरिद्वार, बद्रीनाथ आदि तीर्थ स्थानों में जाकर गंगा मैया में स्नान करने की आकांक्षा रखता है। हर व्यक्ति गंगा मैया के दर्शन व गंगा मैया में स्नान को अपने जीवन का लक्ष्य मानता है। सनातनी अपने पूजा गृह में गंगा जल रखते हैं। उस गंगा जल की विधिवत पूजन करते हैं।

गंगा मैया स्वयं में संपूर्ण संस्कृति हैं, संपूर्ण तीर्थ हैं, उन्नत एवं समृद्ध जीवन का आधार हैं, जिनका एक गौरवशाली इतिहास रहा है। गंगा मैया ने अपनी विभिन्न धाराओं से, विभिन्न स्रोतों से भारतीय सभ्यता को समृद्ध किया, गंगा मैया विश्व में भारत की पहचान है। वह माँ हैं, देवी हैं, प्रेरणा हैं, शक्ति हैं, महाशक्ति हैं, परम शक्ति हैं, सर्वव्यापी हैं, उत्सवों की वाहक हैं। पुराण कहते हैं कि पृथ्वी, स्वर्ग, आकाश के सभी तीन करोड़ तीर्थ गंगा मैया में उपस्थित रहते हैं। गंगाजल का स्पर्श इन तीन करोड़ तीर्थों का पुण्य उपलब्ध कराता है। गंगा मैया का जल समस्त मानसिक एवं तामसिक दोषों को दूर करता है। यह जल परम पवित्र एवं स्वास्थ्यवर्धक है, जिसमें रोगवाहक कीटाणुओं को भक्षण करने की क्षमता है। गंगा मैया का जल उन्नत खेती एवं स्वस्थ जीवन का सदियों से आधार रहा है। गंगा मैया का दर्शन मात्र ही समस्त पापों का विनाश करना है। धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ही नहीं गंगा मैया आर्थिक विकास का भी माध्यम हैं। स्वरोजगार के कितने ही प्रकल्प आप देखेंगे जिनके मूल में गंगा मैया हैं।

गंगा मैया अपनी उपत्यकाओं (तराई) में भारत और बांग्लादेश के कृषि आधारित अर्थ में भारी सहयोग तो करती ही है, यह अपनी सहायक नदियों सहित बहुत बड़े क्षेत्र के लिए सिंचाई के बारहमासी स्रोत भी हैं। इन क्षेत्रों में उगाई जाने वाली प्रधान उपज में मुख्यतः धान, गन्ना, दाल, तिलहन, आलू एवं गेहूँ हैं। जो भारत की कृषि आज का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। गंगा मैया के तटीय क्षेत्रों में दलदल एवं झीलों के कारण यहाँ लेघूम, मिर्च, सरसों, तिल, गन्ना और जूट की अच्छी फसल होती है।

गौरीशंकर

गड़ौली धाम में भगवान शिव और आदिशक्ति स्वरूपा माँ गौरी की 108 फीट ऊँची प्रतिमा (निर्माणाधीन), इस दिव्य स्थली को एक पावन स्वरूप प्रदान करती है, जहाँ से सुख, समृद्धि, संतोष, स्वास्थ्य, सद्ग्राव व संस्कारों का निर्झर प्रवाह सब ओर परिलक्षित होता है।

“गौरीशंकर ऐसा शुभ रूप है जो भगवान शिव और देवी पार्वती के दिव्य एकीकरण का प्रतीक है”। गौरीशंकर आदि शक्ति का स्वरूप है, माँ गौरी जो प्राकृतिक रूप में हैं और जगत पिता भगवान शंकर जो पुरुष रूप में हैं। सनातन धर्म की मान्यताओं के अनुसार अनुसार शिव, शंकर या महादेव कल्याण के देवता माने गए हैं। वह त्रिदेवों में से एक देव हैं। देवी गौरीशंकर जी की अर्धांगिनी हैं, वह स्वयं त्रिदेवियों में से एक हैं। वह संसार के कण-कण में भिन्न स्वरूप में वास करती हैं। जब-जब संसार में धर्म का नाश हुआ है, उन्होंने अवतार लिए हैं। वह माँ की ममता से लेकर, राक्षसों का संहार करने वाली देवी के रौद्र रूपों का प्रतिनिधित्व करती है। संसार के आदि से अनंत काल तक प्रत्येक वस्तु व प्राणी में उनका अंश समाया हुआ है। भगवान शंकर अत्यंत ही भोले हैं वहाँ माँ गौरी दयालु देवी हैं इसलिए पूर्ण श्रद्धा से इनसे कुछ मांगता है तो गौरीशंकर उनकी सभी कामनाओं की पूर्ति करते हैं।

मान्यता है की गौरीशंकर के पूजन से जीवन में भय और अवसाद जैसी व्याधियों का निवारण होता है। उनकी कृपा से मन के भीतर छुपा भय समाप्त होता है। गौरीशंकर के आशीर्वाद से कर्मशक्ति की प्राप्ति होती है, अर्थात् किसी भी संकल्प, कार्य, प्रयास या निर्णय में सफलता ही प्राप्त होती है। गौरीशंकर की आराधना से भक्तों के दुख-दर्द व कष्ट दूर होते हैं। उनकी समस्त चिंताओं का भार समाप्त हो जाता है, उनकी कार्य कुशलता में वृद्धि होती है। जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है तथा सकारात्मक विचारों का संचार होता है। साधक को शिव और शक्ति दोनों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।





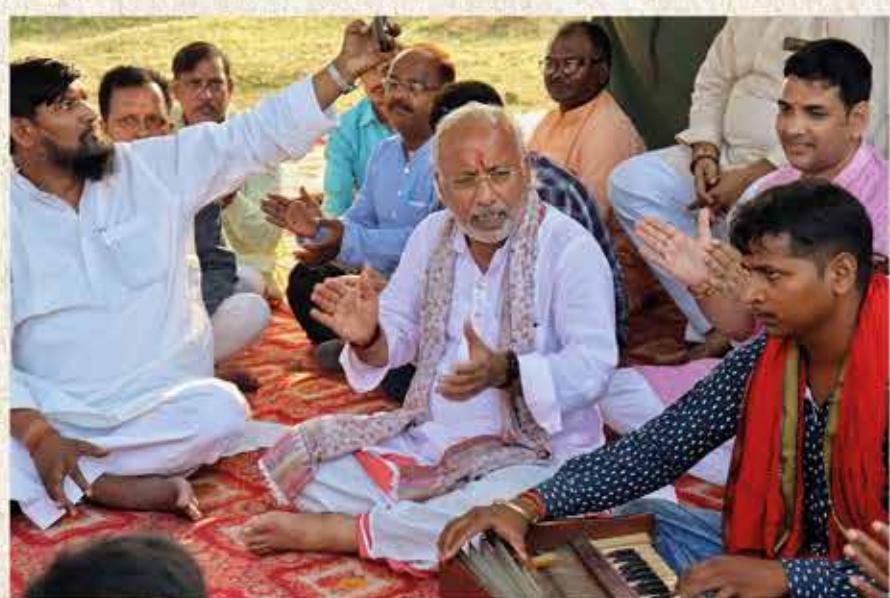
O S बाल कुंदन फाउंडेशन

चाहे वो कोरोना जैसी वैश्विक आपदा में आस खो बैठे लोगों की सेवा हो या फिर कड़कती ठण्ड से ठिठुर रहे लोगों की सहायता हो या फिर परम्पराओं को संजोने, संवारने और उनके संवर्धन का निश्चय हो। “नर सेवा, नारायण सेवा” का मूल मन्त्र ले कर O S Bal Kundan Foundation सतत कार्यरत है। विगत कुछ ही समय में अपनी सक्रियता से फाउंडेशन ने जन जन के हृदय में एक विशिष्ट स्थान बना लिया है।

आप भी जानिये फाउंडेशन की कुछ उल्लेखनीय गतिविधियों के विषय में :-

- कोरोना जैसी वैश्विक आपदा में श्री काशी विश्वनाथ अन्नक्षेत्र से संचालित 'भोजन सेवा' असहायों का सहारा बना। इसमें कोरोना संक्रमितों और परिजनों की सेवार्थ सात्विक भोजन घर-घर पहुँचाया। अक्षय तृतीया के पावन पर्व से प्रारंभ कर प्रसाद रूपी सात्विक भोजन होम आइसोलेटेड मरीजों को भेजा गया। काशी में गणमान्य जनों ने भी यह प्रसाद ग्रहण किया।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिन पर सेवा सप्ताह के अवसर पर हृदय व श्वास रोगियों के लिए तुलसी उद्यान, महमूरगंज, काशी में मेदांता हॉस्पिटल, दिल्ली के साथ मिलकर निशुल्क चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया।
- नवरात्रि, 5 से 14 अक्टूबर 2021, के पावन अवसर पर गड़ौली धाम में माता रानी का अनुष्ठान कराया गया और फाउंडेशन द्वारा प्रतिदिन **500** से अधिक लोगों में प्रसाद वितरण व स्वास्थ्य परीक्षण हेतु शिविर भी आयोजित किया गया।
- गड़ौली धाम में महानवमी के दिन उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या जी ने, महायज्ञ में आहुति देने के साथ संस्था द्वारा लगाई गयी प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। नौ दिनों तक चले इस कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित भंडारे में **21000** हजार श्रद्धालुओं को माँ के आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद को ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ।
- गत कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर श्रद्धाभाव से देव दीपावली मनायी गयी। इस शुभ अवसर पर गड़ौली धाम में सुंदरकाण्ड पाठ व गंगा आरती कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। धाम की सज्जा हेतु दीपमाला से लिखे गौ, गंगा, गौरीशंकर ने सबको आकर्षित किया।





- फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यशाला में, संस्था के संकल्पों - गौ, गंगा, गौरीशंकर से प्रेरित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। कार्यशाला, अक्षय पात्र इसकोन वृन्दावन के पूज्य श्री अनंतदास जी के करकमलों से प्रारंभ हुई व उत्तराखण्ड से पूज्य श्री अक्षयानंद सरस्वती जी के आशीर्वचनों से समाप्त हुई। इसमें संस्था से जुड़े सभी प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।
- कार्यशाला में प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम भारतीय परंपराओं और संस्कृति की विशिष्ट अभिव्यक्ति था। शिव पार्वती नृत्य की व बाँसुरी की मधुर लय ने श्रोताओं को सम्मोहित कर दिया।
- श्री विष्णु वर्धन रेड्डी जी (फाउंडेशन के ट्रस्टी), श्रीमती रानिका जायसवाल और श्री महेश चंद श्रीवास्तव द्वारा गडौली धाम में **2000** कम्बल वितरित किये गए और संध्या बेला में महादेव के उदघोष के साथ माँ गंगा की आरती की गई।
- बनास डेरी (अमूल) के चेयरमैन शंकर चौधरी जी का गडौली धाम आगमन हुआ। गंगा मैया और गडौली धाम की अलौकिक अनुभूति पाकर संतुष्ट भाव से उन्होंने स्वयं को सौभाग्यशाली माना की ऐसी दिव्यता का अनुभव उन्हें मिला।
- काशी के मिर्जामुराद में विवेक शैक्षणिक संस्थानों में फैमिली हैप्पीनेस किट का वितरण किया गया।
- गडौली धाम में **400** वृद्धों और विधवाओं की शिविर लगाकर पेंशन से सम्बंधित कार्यवाही पूरी की गयी तथा **150** दिव्यांगों को ट्राई साइकिल भेंट की गई।
- गडौली धाम में 15 जनवरी 2022 को मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर गौरीशंकर मंदिर, गौ मंदिर एवं एडमिन ब्लॉक की शिलान्यास विधि आयोजित की गयी।

गड़ौली धाम

माँ गंगा के तट पर स्थित गड़ौली धाम वैज्ञानिक शोध, विमर्श व विवेचना का केंद्र होने के साथ-साथ यहां आने वाले श्रद्धालुओं को संतोष की एक अपूर्व अनुभति देता है धाम की दिव्यता और महत्ता का वर्णन पहले भी किया जा चुका है। गौ, गंगा, गौरीशंकर के मूल मंत्र को आधार मान धाम में विभिन्न प्रकार के युग प्रवर्तक प्रकल्प संचालित हो रहे हैं। हमारी आस्था है की गौमाता में परंपरागत श्रद्धा व उनकी उपस्थिति न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर स्वाबलंबी बनाएगी अपितु समस्त सृष्टि के लिए अनुकरणीय उदाहरण भी प्रस्तुत करेगी। जिसमें गौमाता से जुड़े प्रकल्प, अलौकिक ही नहीं, आर्थिक, आध्यात्मिक व वैचारिक संपन्नता के भी कारक बनेंगे। यह दैवीय योग ही है कि किसी समय अति प्राचीन सभ्यताओं के केंद्र रहे इस पुरातन क्षेत्र में धाम का सृजन हुआ है।





गौरीशंकर की 108 फीट ऊँची प्रतिमा

गड्डैली धाम में सदानीरा माँ गंगा के पावन तट पर 10000 sq ft में बने व्याख्या केंद्र के ऊपर स्थित 108 फीट ऊँची गौरीशंकर की प्रतिमा (निर्माणाधीन) दूर दूर तक सुख, संतोष और समृद्धि का स्रोत है। आने वाले श्रद्धालुओं, साधकों, अर्चकों व भक्तों की अपेक्षाओं का यह प्रतिमा दिव्य प्रकटीकरण है जो केवल दैवीय कृपा से ही संभव हो पा रहा है। भक्तों पर कृपा की वर्षा करने वाले भगवान शंकर और शक्ति स्वरूपा माँ गौरी की इस प्रकार की दिव्य प्रतिमा पूरे विश्व में कहीं और नहीं है।

गौरीशंकर की यह भव्य प्रतिकृति न केवल असंख्य भक्तों की अटूट आस्था का प्रतिबिम्ब है बल्कि इस पावन क्षेत्र की सम्पन्नता, विशिष्टता व प्रसिद्धि का भी एक महत्वपूर्ण कारण है। इस प्रतिमा के दर्शन का लाभ लेने दूर दूर से श्रद्धालु यहाँ आते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था की समृद्धि में बहुमूल्य योगदान देते हैं।

कुन्दन कामधेनु मन्दिर - गौ सेवा का एक प्रकल्प

कुन्दन कामधेनु मंदिर में आप स्वच्छंद विचरती गौ मैया की दर्शन लाभ तो प्राप्त करते ही हैं, गौ मंदिर में पूजा अर्चना के माध्यम से मन को अपूर्व शान्ति तथा सभी मनोरथों की पूर्ति का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

गौ मैया-जिनके के पृष्ठदेश में ब्रह्म का वास है, गले में विष्णु का, मुख में रुद्र का, मध्य में समस्त देवताओं और रोमकूपों में महर्षिगण, पूँछ में अन्नत नाग, खूरों में समस्त पर्वत, गौमूत्र में गंगादि नदियाँ, गौमय में लक्ष्मी और नेत्रों में सूर्य-चन्द्र हैं - के दर्शन से ही ऐसा पुण्य प्राप्त होता है जो बड़े-बड़े यज्ञ दान आदि कर्मों से भी नहीं प्राप्त हो सकता। स्पर्श कर लेने मात्र से ही गौमाता मनुष्य के सारे पापों को नष्ट कर देती है। गाय, गोपाल, गीता, गायत्री तथा गंगा धर्मप्राण भारत के प्राण हैं, आधार हैं। इनमें गौमाता का महत्व सर्वोपरि है। गौमाता पूजनीय है जिसकी बराबरी न कोई देवी-देवता कर सकता है और न कोई तीर्थ। धर्मग्रंथ बताते हैं समस्त देवी-देवताओं एवं पितरों को एक साथ प्रसन्न करना हो तो गौभक्ति-गोसेवा से बढ़कर कोई अनुष्ठान नहीं है।

गड़ैली धाम में संचालित कुन्दन कामधेनु प्रकल्प में हमारा प्रयास है की प्रत्येक परिवार किसी न किसी प्रकार से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से गौ माता से जुड़े व इस प्रकार अनेकों गौ परिवारों का सृजन व संवर्धन हो। पंचगव्य की उपयोगिता की समझ उसका दैनिक जीवन में प्रयोग इस भाव के साथ करना की गौ माता हमारा रक्षण कर रही हैं। हम मानते हैं की इससे समाज में आमूल परिवर्तन होंगे, जागरण होगा और यह निश्चय ही सुख, संतोष व समृद्धि का कारण बनेगा। गौ माता पर केन्द्रित परमवैभव संपन्न ग्रामीण अर्थव्यवस्था कोई नवीन विचार नहीं है। ये सदा से ही संपन्न राष्ट्र की शक्तियों का आधार रही है। यदि गंभीरता से चिंतन करें तो हम पाते हैं की गौमाता पर किसी न किसी प्रकार से हमारी ऊर्जा हेतु निर्भरता की तुलना सूर्यदेव से इतर किसी अन्य स्त्रोत से नहीं की जा सकती। अतः यह कहना सर्वथा उचित होगा की गौ माता हमारा रक्षण करती हैं हम उनका नहीं और यह गौ-रक्षा, जिसमें हम रक्षित हैं, हमारी आधारभूत आवश्यकता है और इसमें में स्वास्थ्य, मानवता, संस्कृति और पर्यावरण की रक्षा है। इसी भाव से धाम में गौ माता की अनुकरणीय सेवा सुश्रृष्टा होती है।





KLASSIK
STIFTUNG
WEIMAR

8. Dezember 2020
Grünes Land
Thüringen 2025

व्याख्या केंद्र/Interpretation Centre

गड़ौली धाम का एक विशिष्ट आयाम, व्याख्या केंद्र/Interpretation Centre जो गौरीशंकर की दिव्य प्रतिमा का आधार भी है। 10000 sq ft में बने इस व्याख्या केंद्र में विभिन्न विषयों पर गहन शोध, विचार व प्रयोग यह सुनिश्चित करते हैं कि धाम में किया जा रहा कार्य तथा सम्बंधित विचार सदैव प्रमाणिकता व प्रासंगिकता की कसौटी पर खरे उतरें। इस केंद्र में आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु के लिए प्रतिकृतियों, संग्रहालय, पुस्तकालय, ऑनलाइन व ऑफलाइन साहित्य तथा मानचित्रों के साथ इस प्रकार की व्यवस्था है कि वह पूरी तम्यता के साथ घंटा-दो घंटा यहाँ समय बिता कर जब यहाँ से प्रस्थान करें तो किसी भी विषय में उनका ज्ञान किसी विशेषज्ञ से कम न हो।

भारतीय अध्यात्म में, पानी उन पाँच मूलभूत तत्वों में से एक है, जो पूरी सृष्टि का निर्माण करते हैं। जापान में HADO रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा किए गए एक लोकप्रिय अध्ययन में यह पाया गया है कि पानी की क्रिस्टलीय संरचनाएँ उनके बाहरी वातावरण के सकारात्मक और नकारात्मक स्पंदनों का जवाब देती हैं। इस अध्ययन में पाया गया कि प्रार्थना, मंत्र, या सकारात्मक भावनाओं जैसे प्रेम और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति करने पर स्थिर पानी की संरचना पानी की सामान्य संरचना से काफी बदल गई। ऐसा पता चला कि गंगा मैया के ऊपरी हिस्सों में बाँधों के बाद भी गंगा मैया की क्रिस्टल संरचनाएँ काफी हद तक अपरिवर्तित रहीं, खासकर जहाँ भक्त बातचीत करते हैं, प्रसाद देते हैं या उनका जप करते हैं।

गंगा मैया वास्तव में अन्य जल निकायों से विशिष्ट रूप से भिन्न हैं। इन शक्तिशाली और अद्वितीय वैज्ञानिक प्रभावों के साथ हम देख सकते हैं कि गंगा मैया के बारे में अभी भी बहुत कुछ सीखना बाकी है।

गंगा मैया की उच्च ऑक्सीजन प्रतिधारण क्षमता, विशेष रूप से हिमालय से निकलने वाली नदी के ऊपरी हिस्सों में, एक और कारण है कि लंबे समय तक भंडारण के बाद भी इनका पानी खराब नहीं होता है। रुड़की विश्वविद्यालय के एक पर्यावरण इंजीनियर डी.एस. भार्गव द्वारा व्यापक तीन साल (1982-1984) के अध्ययन के माध्यम से यह पाया गया कि गंगा मैया की ऑक्सीजन प्रतिधारण क्षमता दुनिया की किसी भी अन्य नदी की तुलना में 15-25 गुना अधिक है।

1896 में फ्रांसीसी जर्नल एनालेस डी इंस्टिट्यूट पाश्चर में प्रकाशित ब्रिटिश चिकित्सक ई. हैनबरी हैंकिन द्वारा लिखे गए एक पत्र में यह देखा गया था कि घातक हैजा रोग का कारण बनने वाले जीवाणु को गंगा के पानी से उपचारित करने के तीन घंटे के भीतर मार दिया जा सकता है। हालाँकि, वही जीवाणु अड़तालीस घंटे के बाद भी आसुत जल में पनपता रहा। गंगाजल में मौजूद यह अनूठा कारक, जिसे अब एक वायरस के रूप में जाना जाता है, जो रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया को खाता और नष्ट करता है, एक बैक्टीरियोफेज के पहले आधुनिक उद्घरणों में से एक था। गंगा मैया के ऊपरी हिस्सों में मौजूद कई चट्ठानों, वनस्पतियों, कार्ड इत्यादि के साथ लगातार बहने और रगड़ने से ये खनिजों से संतुप्त हो जाती हैं और पोषक तत्वों से समृद्ध हो जाती हैं जो इनके पानी पर निर्भर जीवों के पूरक होते हैं।

गंगा मैया के जल में जो अवयव हैं, खनिज हैं, जड़ी बूटियों के मिश्रित होने से औषधीय गुण हैं। यह गुण भौगोलिक स्थिति के अनुसार भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। इस पर गहन अध्ययन शोध, अध्ययन हुआ है, कई अविष्कार हुए हैं और इस विषय में अद्भुत पठनीय सामग्री उपलब्ध है। इस सबको संग्रहित कर सबके समक्ष प्रस्तुत करना व इस पर उच्च कोटि का शोध भी हमारा ध्येय है। शास्त्रों में गंगा जी को माँ की संज्ञा दी गयी है, ये तभी हुआ है जब उनमें प्रकृति के पोषण की क्षमता का अनुभव किया गया। गंगा मैया की सर्वस्पर्शी जागरूकता व सभी के जीवन में उपास्थिति के बिना जीवन में संपूर्णता की सदैव कमी रहेगी इसे पूर्ण करने का यह प्रयास है।





गौ मैया-जिनके पृष्ठदेश में ब्रह्म का वास है, गले में विष्णु का, मुख में रुद्र का, मध्य में समस्त देवताओं और रोमकूपों में महर्षिगण, पूँछ में अन्नत नाग, खूरों में समस्त पर्वत, गौमूत्र में गंगादि नदियाँ, गौमय में लक्ष्मी और नेत्रों में सूर्य-चन्द्र हैं। इनके दर्शन से ही ऐसा पुण्य प्राप्त होता है जो बड़े-बड़े यज्ञ दान आदि कर्मों से भी नहीं प्राप्त हो सकता। स्पर्श कर लेने मात्र से ही गौमाता मनुष्य के सारे पापों को नष्ट कर देती है। गाय, गोपाल, गीता, गायत्री तथा गंगा धर्मप्राण भारत के प्राण हैं, आधार हैं। इनमें गौमाता का महत्व सर्वोपरि है। गौमाता पूजनीय हैं जिसकी बराबरी न कोई देवी-देवता कर सकता है और न कोई तीर्थ। धर्मग्रंथ बताते हैं समस्त देवी-देवताओं एवं पितरों को एक साथ प्रसन्न करना हो तो गौभक्ति-गोसेवा से बढ़कर कोई अनुष्ठान नहीं है।

इसी भाव की अभिव्यक्ति है कुंदन कामधेनु (गौ मंदिर)। यहाँ आप स्वच्छंद विचरती गौ मैया की दर्शन लाभ तो प्राप्त करते हैं, गौ मंदिर में पूजा अर्चना के माध्यम से मन को अपूर्व शान्ति तथा सभी मनोरथों की पूर्ति का मार्ग भी आप प्रशस्त करते हैं।

शिव पुराण के अनुसार, शिव-शक्ति का संयोग ही परमात्मा है। शिव की जो पराशक्ति है उससे चित शक्ति प्रकट होती है। चित शक्ति से आनंद शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, आनंद शक्ति से इच्छाशक्ति का उद्भव हुआ है, इच्छाशक्ति से ज्ञानशक्ति और ज्ञानशक्ति से पांचवीं क्रियाशक्ति प्रकट हुई है। इन्हीं से निवृत्ति आदि कलाएं उत्पन्न हुई हैं। शिव के हृदय में शक्ति का और शक्ति के हृदय में शिव का वास है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी, वहीं माँ गौरी दयालु देवी हैं। शिव जिनमें सृष्टि का संपूर्ण ज्ञान समाया है। माँ गौरी माँ की ममता से लेकर, राक्षसों का संहार करने वाली देवी के रौद्र रूपों का प्रतिनिधित्व करती हैं। गौरीशंकर का यह स्वरूप, संसार के आदि से अनंत काल तक, प्रत्येक वस्तु व प्राणी में अंश के रूप में विद्यमान है।

गौरीशंकर के विश्वविख्यात स्वरूप 108 फीट ऊँची प्रतिमा के दर्शन से आपमें आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होगा और आप सुख, समृद्धि व संतोष प्राप्त करेंगे। यहाँ गौरीशंकर सभी कामनाओं की पूर्ति करते हैं।

सुश्रुत संपूर्ण स्वास्थ्य

गड़ौली धाम में स्थित सुश्रुत संपूर्ण स्वास्थ्य आयुर्वेद, योग व ध्यान का अन्द्रुत सामंजस्य तो है ही औषधि और दर्शन शास्त्र दोनों के गंभीर विचारों का अभूतपूर्व सामंजस्य भी यहाँ देखने को मिलता है। यह प्रकल्प सम्पूर्ण स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट छवि बनाने की दिशा में अग्रसर है। यहाँ प्राकृतिक कृषि से प्राप्त वस्तुओं के संतुलित भोजन, औषधि, गौ माता के आशीर्वाद स्वरूप दुध इत्यादि (पंचगव्य) से चिकित्सा का प्रावधान है, पंचकर्म की विशिष्ट व्यवस्था भी यहाँ उपलब्ध है। सुश्रुत सम्पूर्ण स्वास्थ्य हमारे इस भाव का मूर्त रूप है की सेवा की आवश्यकता मन आत्मा और शरीर तीनों को है। अधिकतर चिकित्सा पद्धतियाँ केवल भौतिक शरीर पर केंद्रित हैं, किंतु यदि चिंतन करें तो हम पाते हैं की संक्रमण व दुर्घटना के इतर अधिकांश व्याधियों का मूल मन होता है तथा मन आत्मा और शरीर तीनों का उपचार हो सके इसके लिए पहले मन का ठीक होना आवश्यक है, योग व ध्यान की पहले आवश्यकता है। यह सब करने के लिए व्यवस्थित तंत्र और आप सहज ही उसका अनुपालन करें व उसे अपने जीवन में अंगीकार करें इसकी उत्तम व्यवस्था सुश्रुत सम्पूर्ण स्वास्थ्य में उपलब्ध हैं।

यह प्रकल्प कारक है आपके जीवन में एक सम्पूर्ण सुरक्षा कवच की रचना का जिससे आप रोगों की प्रतीक्षा नहीं करते जिसके बाद उपचार हो, बल्कि रोगरहित जीवन शैली आपको स्वयं को तो लाभान्वित करती ही है, आप औरों के लिए भी एक प्रेरणापुंज बन जाते हैं।

गौ माता के दूध, घृत, दही, गोमूत्र और गोबर के रस को मिलाकर पंचगव्य तैयार होता है। पंचगव्य के सभी घटक द्रव्य महत्वपूर्ण गुणों से संपन्न हैं। इनमें गौ माता के दूध के समान पौष्टिक और संतुलित आहार कोई नहीं है। इसे अमृत माना जाता है। यह विपाक में मधुर, शीतल, वातपित शामक, रक्तविकार नाशक और सेवन हेतु सर्वथा उपयुक्त है। गौ माता का दही भी समान रूप से जीवनीय गुणों से भरपूर है। दही से बना छाछ पचने में आसान और पित्त का नाश करने वाला होता है। गाय का धी विशेष रूप से नेत्रों के लिए उपयोगी और बुद्धि-बल दायक होता है। इसका सेवन कांतिवर्धक माना जाता है। गोमूत्र प्लीहा रोगों के निवारण में परम उपयोगी है। रासायनिक दृष्टि से देखने पर इसमें पोटेशियम, मैग्नेशियम, कैलशियम, यूरिया, अमोनिया, क्लोराइड, क्रियेटिनिन जल एवं फास्फेट आदि द्रव्य पाये जाते हैं। गोमूत्र कफ नाशक, शूल गुला, उदर रोग, नेत्र रोग, मूत्राशय के रोग, कष्ट, कास, श्वास रोग नाशक, शोथ, यकृत रोगों में राम-बाण का काम करता है।

चिकित्सा में इसका अन्तः बाह्य एवं वस्ति प्रयोग के रूप में उपयोग किया जाता है। यह अनेक पुराने एवं असाध्य रोगों में परम उपयोगी है। गोबर का उपयोग वैदिक काल से आज तक पवित्रीकरण हेतु भारतीय संस्कृति में किया जाता रहा है। यह दुर्गंधनाशक, पोषक, शोधक, बल वर्धक गुणों से युक्त है। विभिन्न वनस्पतियाँ, जो गाय चरती है उनके गुणों के प्रभावित गोमय पवित्र और रोग-शोक नाशक है।



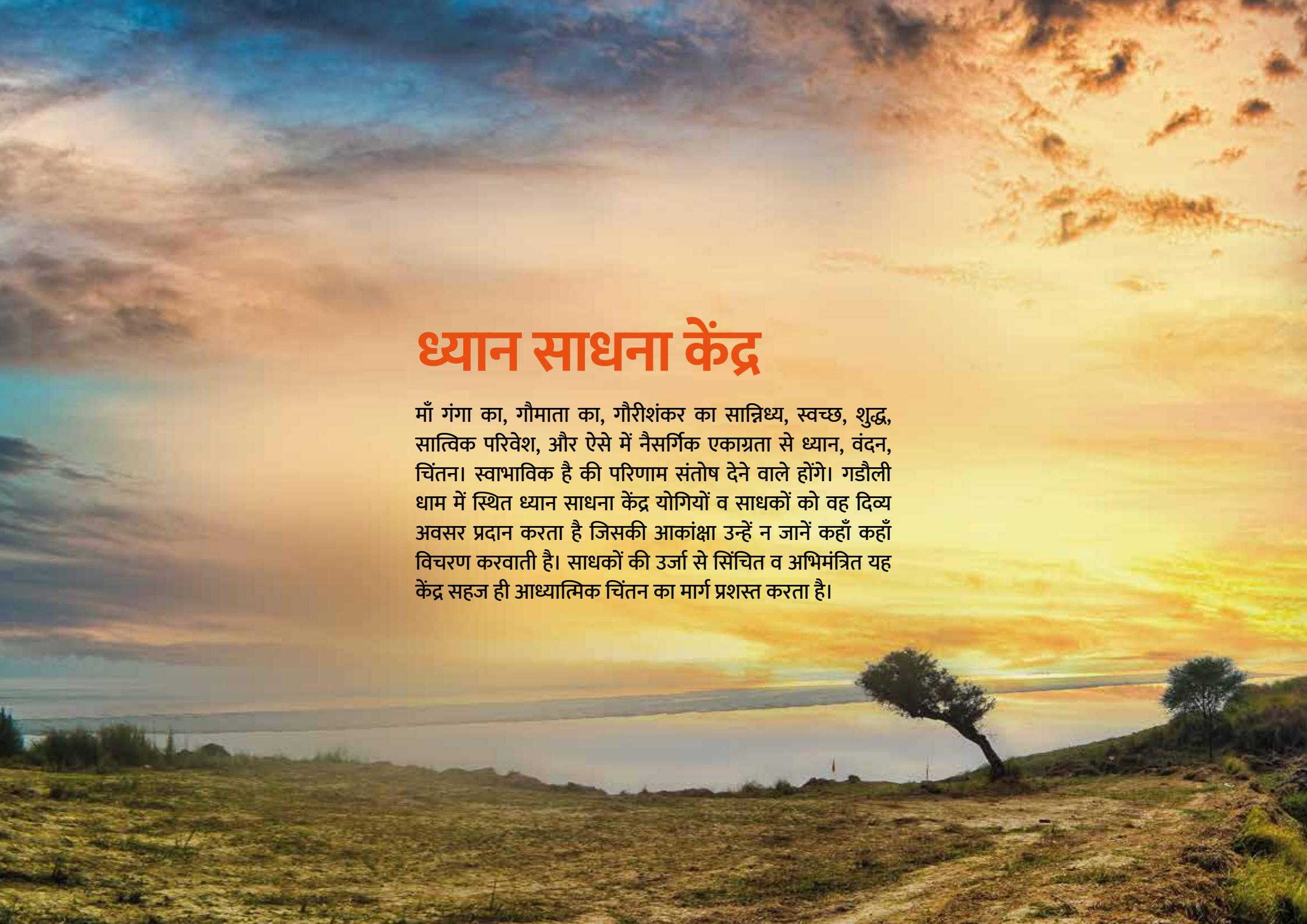


बालकृष्ण गुरुकुल

गड़ौली धाम की अनुपम निधि बालकृष्ण गुरुकुल व विद्यालय जिसमें संस्कारों व अनुशासन की भट्टी में छात्र कुंदन की तरह तैयार होकर समाज- व्यवस्था में स्वावलम्बन व स्वाभिमान की नींव रखेंगे। इस प्रकल्प के माध्यम से हम व्यक्ति-निर्माण से कुटुम्ब-निर्माण, कुटुम्ब-निर्माण से समाज निर्माण, समाज निर्माण से राष्ट्र-निर्माण एवं राष्ट्र-निर्माण से विश्वनिर्माण करने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग करने के लिए कटिबद्ध हैं। पारंपरिक व प्राचीन शिक्षा का अनूठा सम्मिश्रण जहाँ एक ओर छात्रों में माता - पिता की सेवा, गुरुजनों का आदर, राष्ट्र के प्रति अनुराग, संस्कृति का पोषण, परहित चिंतन जैसे अनुपम गुणों का सतत विकास होगा, वहीं दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा के प्रारूप को आत्मसात करते हुई छात्रों को वर्तमान 'प्रतियोगी युग' में अग्रणी भी बनाएगा।

ध्यान साधना केंद्र

माँ गंगा का, गौमाता का, गौरीशंकर का सान्निध्य, स्वच्छ, शुद्ध, सात्त्विक परिवेश, और ऐसे में नैसर्गिक एकाग्रता से ध्यान, वंदन, चिंतन। स्वाभाविक है कि परिणाम संतोष देने वाले होंगे। गडौली धाम में स्थित ध्यान साधना केंद्र योगियों व साधकों को वह दिव्य अवसर प्रदान करता है जिसकी आकांक्षा उन्हें न जानें कहाँ कहाँ विचरण करवाती है। साधकों की उर्जा से सिंचित व अभिमंत्रित यह केंद्र सहज ही आध्यात्मिक चिंतन का मार्ग प्रशस्त करता है।





औषधीय उद्यान

वर्तमान काल में प्राकृतिक उत्पादों लोगों की रुचि बढ़ी है जिसके परिणामस्वरूप औषधीय पौधों का स्थानीय, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बाजार में महत्व बढ़ा है। औषधीय पौधे स्वदेशी चिकित्सा पद्धति के लिए प्रमुख संसाधन हैं। आयुष प्रणालियों की राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर पहुंच और स्वीकार्यता, गुणवत्तापूर्ण औषधीय पौधों पर आधारित कच्चे माल की निर्बाध उपलब्धता पर निर्भर है, जिससे औषधीय पौधों का व्यापार निरन्तर बढ़ रहा है। ऐसे में गडौली धाम में औषधीय उद्यान जहाँ एक तरफ स्थानीय प्रजातियों के संरक्षण व् जागरूकता में महत्वपूर्ण योगदान देंगे वहीं आस पास के क्षेत्रों में इनकी कृषि और अर्थतंत्र को सट्टढ़ करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे।





गौरीशंकर घाट

गंगा मैया का समृद्ध, शांत व नीरव प्रवाह हो व सर्वत्र वातावरण में सकारात्मकता व सात्त्विकता की अनुभूति हो, ऐसे में कौन न चाहेगा की गंगा मैया को स्पर्श करे। उनके दिव्य गंगाजल का सेवन करे। तट पर बैठे, चिंतन व मनन करे।

ऐसा ही कुछ विचार था गौरीशंकर घाट की निर्माण के परिप्रेक्ष्य में, जो फलीभूत हुआ है सुगम, स्वच्छ व अलौकिक सौन्दर्य से परिपूर्ण इस घाट के रूप में। इस घाट पर आने वालों की संख्या, ऊर्जा और उत्साह देख विश्वास ही नहीं होता की किसी समय इस दिव्य स्थान के सौन्दर्य के विषय में जो जागरूकता थी वो नगण्य थी। यही नहीं, गौरीशंकर घाट से जलमार्ग के द्वारा माँ विन्ध्यवासिनी, प्रयागराज संगम, चुनार का किला व काशी के घाटों के सौन्दर्य का भी आनंद ले पाने की सुगम व्यवस्था है।

इस युग प्रवर्तक चिंतन व इससे जुड़े प्रयासों का आप भी अंग बनें...

गड़ौली धाम में आपका सविनय स्वागत है। इन शब्दों को आप आह्वान भी मानें की धाम में आ कर आप भी अपनी रुचिनुसार किसी प्रकल्प से जुड़ें, उसकी समृद्धि व प्रसार का अभिन्न अंग बनें तथा गौ, गंगा, गौरीशंकर में अपनी आस्था व प्रयासों को पोषित व फलीभूत होता देखें। किसी भी जानकारी हेतु नीचे दिये माध्यमों से अपनी सुविधानुसार संपर्क करें। आपको इस विस्तृत परिवार का एक अंग देख हम सभी को गौरव व हर्ष होगा।



| www.osbalkundanfoundation.org
osbalkundanfoundation@gmail.com



आप किसी भी भुगतान गेटवे से QR कोड
को स्कैन कर योगदान दे सकते हैं।





www.osbalkundanfoundation.org